कतरन

श्रीमती शोभा मिश्रा

जरा याद करो कुर्बानी

विगत दिवस एक समाचार

ब्रिटिश जजों की

वह दिन त्योहार-सा होता

बिखरते जा रहे हैं। का प्रभाव पूरे समाज ... गया है, वह दि... छाया से दूर होता ... रहा है और धीरे-धी... जो भविष्य के लिए

आवश्यकता है, हम ... जो कि अपने ... शिक्षा पद्धति ... भारत के इतिहा... हमारी लोक-... की बहुत आव... विख्यात कवि ... समास करना ... दो पौधे। ... रहा हूं, अप...

अब ... हम ...

फेसबुक और ट्विटर 21वीं सदी के वे माध्यम हैं, जिनके द्वारा आज का मानव अपने विचारों को अपनी बात को, इंटरनेट द्वारा प्रसारित करता है। इनके माध्यम से हम घर बैठे ही अपने असंख्य मित्र बना सकते हैं और अपने विचारों का आदान- प्रदान कर सकते हैं। हर चीज के दो पहलू होते हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। मोबाइल, कम्प्यूटर, टीवी समाज में सुविधाओं के लिए लाए गए थे, किन्तु आज हम देख रहे हैं इनके दुष्परिणामों को भी, जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। ये सभी किसी न किसी रूप में समस्याएं बने हुए हैं। इसी प्रकार फेसबुक और ट्विटर जैसे जानकारी और विचार प्रदान करने वाले माध्यमों के भी सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम है। जब ... लगाने की बात उठने ल... सकारात्मक रूप देखा जा... हम न ... के युग के ऐसे माध्यम हैं, जिन... जाने कितनी नई-नई जानकारियाँ प्राप्त करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इन पर पाबंदी लगाना न संभव है और न ही उचित है। जितने भी आविष्कार होते हैं इनका उद्देश्य मानवीय हित में होता है। किन्तु उनका दुरुपयोग तो हम इंसान ही करते हैं। जैसे अणु की खोज अणुबम बनाने के लिए नहीं हुई थी, किन्तु मनुष्य ने अणुबम बनाकर इसे मानव विध्वंस का प्रतीक बना दिया। इसलिए अब हम सभी को इन सबके बीच रहने का आदी बना लेना चाहिए।

-श्रीमती शोभा मिश्र, सागर

शासन तंत्र का विघटन

आज हमारा देश बड़ी विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। विकास की योजनाएं भी बन रही हैं। ...छ योजनाएं थोड़ी सफल भी होती हैं पर अधिकांश योजनाएं बस फाइल और पेपरों में ...कर रह जाती हैं। पैसा कहां जाता है। ... नहीं चलता। ... वर्ष नशा मुक्ति दिवस ... रोध में भाषण ...

...लों की विभत्सता

...लीविजन में सीमित चैनल थे उस ... उसके कार्यक्रम गरिमापूर्ण और ... को दर्शाते थे किन्तु जैसे ... बढ़ी और चैनल भी बढ़ते गए। ...स्पर्धा में वे यह भी भूल जाते है कि ... और देश को वे क्या दिखा रहे है। ...माज में जो अश्लीलता, फूहड़पन ... है वह सब इसी का परिणाम है। ...कल खतरों के खिलाड़ी कार्यक्रम ... हुआ है, समझ में नहीं आता कि वह ... को देश को क्या दिखाना चाहता है? ... न सौंदर्य है न कोई अच्छाई और न ... उन सिर्फ फूहड़पन और विभत्सता है। ... से कार्यक्रम को बंद कर देना चाहिए। ... न जाने कितने जीव-जन्तुओं ... की जा रही है। एक तरफ हमा... विविधता की बात करता है ... 'जय विविधता भक्षण' हो ... तरफ ... तर्ज पर इन्टरटेनमेंट के लिए ... कार्यक्रम है जिसमें कुछ ... और प्रसार-प्रचार विभाग से ... कि कृपया इस तरह के कार्यक्रमों को बंद कर ... बच्चे भी इसे ... कार्यक्रमों का ... है। बच्चे इन्हें ... करना चाहेंगे।

– श्रीमती शोभामिश्र,
शांति विहार कॉलोनी, सागर

... नहीं हो सकता। बस अब तो ... है मानव मूल्यों का बदलना। नेता, ...री, मंत्री अपने को बदलें, अपने भीतर ...ट्रीय चेतना, ईमानदारी लाएं तभी देश का कुछ भला हो सकता है।

– श्रीमती शोभा मिश्र, सागर

यह कैसी देश सेवा?

चारों तरफ सांसदों की वेतन बढ़ाने की चर्चाएं जोर पर है। इसको लेकर संसद में अच्छा खासा हंगामा हुआ। ये नेता कितना खाएंगे, इनका तो कभी पेट ही नहीं भरता। देश की गरीब जनता को खाने के लिए रोटी नहीं, पहनने को कपड़े नहीं, इन नेताओं ने अपना वेतन तीन गुना बढ़वा लिया और सरकार ने पास भी कर दिया। यह सब कुछ अजीब सा नहीं लगता? इससे तो ऐसा लगता है, चोर-चोर मौसेरे भाई। प्रश्न उठता है कि जब सांसद चुनकर आते हैं तब वह यह क्यों कहते हैं कि वह देश और समाज की सेवा करेंगे?

-श्रीमती शोभा मिश्र, सागर

राष्ट्रभाषा की दुर्दशा

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। हमारी सभ्यता, संस्कृति का अंग है। हमारे देश को परिभाषित करती है। उसी भाषा की दुर्दशा देखकर दुख होता है और कहीं न कहीं विवशता का अहसास भी। प्राचार्य, अध्यक्ष, प्रधान अध्यापक, शिक्षक आदि कई शब्द हैं, जो पुरुष और महिला दोनों के लिए ही उपयोग होते हैं, किंतु आजकल महिलाओं के लिए अध्यक्षा, प्राचार्या, शिक्षिका आदि का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा चंद्र बिंदु, रेफ आदि की गल्तियां तो मामूली बात। चूंकि यह सब स्कूलों में द्वारा सिखाया जाता इसलिए आने वाली पीढ़ी यही सीख रही है र हम बेबस होकर देख रहे हैं।

-श्रीमती शोभा मिश्र,
शांति विहार, सागर

Scanned with OKEN Scanner

कतरन
– श्रीमती शोभा मिश्र

प्रथम संस्करण – 2012

प्रकाशक
अमन प्रकाशन,
नमक मंडी, सागर 4700002 (म.प्र.)
दूरभाष – 09826434225
Ph. & Fax : 07582-406929

अक्षर संयोजन
एक्टिव कम्प्यूटर्स, सागर
मोबा. – 9826434225

Scanned with OKEN Scanner

कतरन/5

...तो छात्रों के लिए वह दिन त्योहार-सा होता

सारांश — बड़ों की अनुभवी बातें

मेरा मानना है कि तरुणाई और मानव-मूल्य दोनों ही समानांतर चलने वाली दो अलग-अलग रेखाएं हैं, एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव-मूल्य का मतलब है उत्तम संस्कार। जब तक अच्छे संस्कार आज के तरुणों में नहीं होंगे तो वे कैसे सही मायने में एक अच्छे इंसान बन पाएंगे?

शोभा मिश्र
सेवानिवृत्त प्राचार्य
सागर

आज तरुण तो हैं पर मानव-मूल्य गायब है। एक उच्छृंखलता, उद्दंडता, बेहयापन इनके संस्कार हैं। आज यदि देखा जाए तो एक तिहाई बच्चों का यही हाल है। कितना अंतर है हमारी पीढ़ी और आज के इन बढ़ते हुए तरुणों में! हम लोगों में बड़ों के प्रति एक आदर का भाव, एक अदब होता था। आंखों में मर्यादा रहती थी। क्या मजाल कि अपने शिक्षकों के सामने आंख मिलाकर बात सकें। 'शिक्षक कभी भूल से अपने विद्यार्थी से विद्यालय बाहर या अंदर, कुछ बात कर ले तो उसके लिए वह दिन मानो त्योहार की तरह हो जाता था।' कितने अनुशासन में हमने अपना समय बिताया, किंतु आज ऐसा माहौल, ऐसा वातावरण नहीं है। न ऐसे शिक्षक हैं और न विद्यार्थी।

मैं सागर में एक हायर सेकंडरी स्कूल की प्राचार्य थी। 19 साल तक मैंने प्राचार्य के पद पर काम किया। उस विद्यालय को मैंने बड़ी ईमानदारी से बहुत ऊंचाइयों तक पहुंचाया। वहां के विद्यार्थियों में वे सब गुण, संस्कार हमारे विद्यालय के परिवार ने दिए थे, जो एक अच्छे विद्यार्थियों में होना चाहिए। गुरु और शिष्य की परंपरा थी। आज मैं देखती हूं कि न 'शिक्षक दिवस' उतनी श्रद्धा से मनाया जाता है और न ही 'गुरु-पूर्णिमा'। आज के शिक्षक और विद्यार्थियों में न तालमेल है और न ही वे बातें हैं, जो कि उनको आपस में जोड़ सके। आज, शिक्षकों में संस्कार नहीं हैं। वे तरुणों को कुछ नहीं दे पा रहे हैं और न ही अपने कर्तव्यों का पालन कर पा रहे हैं, इसीलिए यह तारतम्य टूटता जा रहा है। यही कारण है कि आज की तरुणाई, संस्कार विहीन होती जा रही है। हमारे मानव-मूल्य बिखरते जा रहे हैं। शिक्षा पद्धति निस्पंद होती जा रही है, जिसका प्रभाव पूरे समाज और देश पर पड़ रहा है। हमारा तरुण भटक गया है, वह दिग्भ्रमित होता जा रहा है। अपनी पितृपीढ़ी की छाया से दूर होता तरुण, आज लक्ष्य विहीन यहां-वहां भटक रहा है और धीरे-धीरे एक विशाल शून्य निर्मित होता जा रहा है, जो भविष्य के लिए, हमारे देश के लिए बड़ा घातक है।

आज के वातावरण को देखते हुए आवश्यकता है, हमारे देश को अच्छे शिक्षकों की, उन बुजुर्गों की जो कि अपने अनुभव, अपने संस्कार इन तरुणों को दे सकें। शिक्षा पद्धति में ऐसे पाठ्यक्रम को रखा जाए, जिससे ये हमारे भारत के इतिहास को जान सकें, हमारी परंपराओं को जान सकें, हमारी लोक-संस्कृति से परिचित हो सकें। आज इन्हीं सब बातों की बहुत आवश्यकता है। मैं अपने जीवन के इस अनुभव को विख्यात कवि केदारनाथ सिंह की इन सार्थक पंक्तियों के साथ समाप्त करना चाहूंगी।

मां ने लगाए थे घर के आंगन में तुलसी के दो पौधे।
पिता ने रोपे थे बरगद के छतनार। मैं भटक रहा हूं, अपना एक बिरवा लिए, इसे कहां रोपूं। यही है आज का तरुण।

(जैसा उन्होंने सतीश सिखारिया को बताया)

बेटे ही लूट रहे मां का घर

शोभा मिश्र, शांति विहार कॉलोनी, सागर

रोज किसी न किसी घोटाले का समाचार मिलता है। इनमें नेता, मंत्री अधिकारी शामिल रहते हैं। छापों में बड़ी रकमें मिल रही हैं। हर विभाग भ्रष्ट हो गया है। एक ओर भ्रष्टाचार और दूसरी ओर सरकार की करोड़ों की नई योजनाओं की घोषणा। देश के कर्णधारों को कोई शर्म नहीं आती है? आज देश का विश्वास इनसे उठता जा रहा है। हमने अपनी धरती, अपने वतन, अपनी मां को दांव पर लगा दिया है। सब कुछ लूट लिया है।

राष्ट्रभाषा की दुर्दशा

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। हमारी सभ्यता, संस्कृति का अंग है। हमारे देश को परिभाषित करती है। उसी भाषा की दुर्दशा देखकर दुख होता है और कहीं न कहीं विवशता का अहसास भी। प्राचार्य, अध्यक्ष, प्रधान अध्यापक, शिक्षक आदि कई शब्द हैं, जो पुरुष और महिला दोनों के लिए ही उपयोग होते हैं, किंतु आजकल महिलाओं के लिए अध्यक्षा, प्राचार्या, शिक्षिका आदि का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा चंद्र बिंदु, रेफ आदि की गल्तियां तो मामूली बात है। चूंकि यह सब स्कूलों में द्वारा सिखाया जाता है, इसलिए आने वाली पीढ़ी यही सीख रही है और हम बेबस होकर देख रहे हैं।

-श्रीमती शोभा मिश्र,
शांति विहार, सागर

Scanned with OKEN Scanner

राजा प्रजा का पात्र

गेहूं का भरपूर भंडारण, कितना खुशी का विषय है, किन्तु उसको रखने की व्यवस्था नहीं। कितने दुख की बात है और उससे भी बड़े दुख की बात यह है कि राजा उसे अपनी गरीब प्रजा में बांट नहीं सकता। यह कैसा शासन, यह कैसा शासक जिसको कि अपनी गरीब प्रजा के प्रति कोई संवेदना नहीं है। इस विरोधाभास को तो देखिए एक तरफ भरपूर अनाज पर वह सड़ रहा है और दूसरी तरफ गरीब जनता जिसके पास खाने को अनाज नहीं है पर हम उसे दे नहीं सकते। इस संदर्भ में कवि मैथिली शरण गुप्त की पंक्तियां- ... राजा प्रजा का पात्र है, वह लोक प्रतिनिधि मात्र है, यदि वह प्रजापालक नहीं तो त्याज्य है। हम ऐसा राजा चुने जो सब तरह अपनी सुने, कारण ... का ही असल में राज्य है।

- श्रीमती शोभा मिश्र, शांति विहार कॉलोनी, सागर

...बन चुके हैं

...सकते हैं। ... होते हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। ...मोबाइल, कम्प्यूटर, टीवी समाज में सुविधाओं के लिए लाए गए थे, किन्तु आज हम देख रहे हैं इनके दुष्परिणामों को भी, जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। ये सभी किसी न किसी रूप में समस्याएं बने हुए हैं। इसी प्रकार फेसबुक और ट्विटर जैसे जानकारी और विचार प्रदान करने वाले माध्यमों के भी सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम हैं। जब ...का उपयोग गलत रूपों में होने लगा तब इन पर पाबंदी लगाने की बात उठने लगी। अब यदि इनका सकारात्मक रूप देखा जाए तो ये आज के युग के ऐसे माध्यम हैं, जिनके द्वारा हम न जाने कितनी नई-नई जानकारियां प्राप्त करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इन पर पाबंदी लगाना न संभव है और न ही उचित है। जितने भी आविष्कार होते हैं इनका उद्देश्य मानवीय हित में होता है। किन्तु उनका दुरुपयोग तो हम इंसान ही करते हैं। जैसे अणु की खोज अणुबम बनाने के लिए नहीं हुई थी, किन्तु मनुष्य ने अणुबम बनाकर इसे मानव विध्वंस का प्रतीक बना दिया। इसलिए अब हम सभी को इन सबके बीच रहने का आदी बना लेना चाहिए।

- श्रीमती शोभा मिश्र, सागर

...गों में जागरूकता है

...दिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में साफ-सुथरी राजनी... ...ह चौहान ने राज्यसभा के औचित्य को लेकर ... ...च सदन अपने मूल उद्देश्य से भटक गया ... ...ओं की प्रतिभाओं को संसद का प्रतिनिधि... ...न बल और जोड़-तोड़ का अखाड़ा बै... ...लिए है और इसके सदस्य आखिर क...

...तरुणाई और मानव-मूल्... ...गी दो अलग-अलग रेख... ...मूल्य का मतलब है उ... जब तक अच्छे संस्कार ... में नहीं होंगे तो वे कैसे ... एक अच्छे इंसान बन ... आज तरुण तो ... गायब है। एक ... बेहयापन इनके ... देखा जाए तो ... हाल है। ... और ... हम ...

...नश... जाती... जगह... दु... दोह... इ... के लिए, ... हानिकारक ... इनकी फैक्ट्रिय... हो सकता। यह ... फल, सब्जिय... मिलावट खुले आम ... नाकाम। ऐसे में ... सजा देना चा... सकें। ...

शोभा मिश्र
...प्राचार्य
सागर

...री और ... 'अमवन' जो आ... । हम लोग एक-एक ... है पर इन दम्पति ने पूरा ...कर दिया। सचमुच यह एक ...कर गुजरने का जज्बा है। ...भी सराहना की जाए कम है। इस ... सब भारतवासियों को कुछ सी... ...हिए।

- श्रीमती शोभा मिश्र, शांति विहार कॉलोनी, सागर

बेटे ही लूट रहे मां व...

शोभा मिश्र, शांति विहार कॉलो...

रोज किसी न किसी ... समाचार मिलता ... मंत्री अधिकारी शामि... में बड़ी रकमें मिल... भ्रष्ट हो गया है। ए... दूसरी ...

पिछले सप्ताह ...

...या महिला खिलाड़ियों का उ... ...है? इसे रोकने के क्या उपाय...

नारी अब...

आज महिला अबला नहीं है ... भी क्षेत्र हो, उसे अपनी एक ... व्यक्तित्व और चरित्र ... खिलाड़ियों को अपना दृढ़ ... कर सके। ... साहस हो कि गलत कार्य का विरोध कर सके। खिलाड़ियों में तो होना ही चाहिए। खिलाड़ी महिलाओं ... समस्या से बचने के लिए स्वयं को आगे आना होगा और एक ... मिसाल समाज को देनी होगी कि आने वाली पीढ़ी भी इससे कुछ ... इसके अलावा खेलते समय अपने को इस सही ढंग से प्रस्तुत करें ... गलत निगाहों से न देखे। महिला यह क्यों भूल जाती है कि वह देवी स्वरू... है उसमें एक अद्भुत शक्ति है। यदि कमी है तो बस इतनी कि वह इसका सही उपयोग समय पर नहीं करती है। यदि वे कुछ बातों का ध्यान रखें तो स्वयं को उत्पीड़न से बचा सकती हैं।

-श्रीमती शोभा मिश्र, सागर

...बि... ...ते उ... ...बल ... सोचना स... अपने को इ... चाहे वे हा... अभिनेत्रियों को कि कहीं फिल्मी ... जाए। इसलिए यो... रखना चाहती है, त... मिटाना होगा।

नारी देश की संस्कृ... विचार की प्रतिबिम्ब हो... मातृशक्ति का प्रतीक मानी ... वाले स्वरूप को महत्व दिया ... को। नारी जागे, अपने रूप ... अपनी गरिमा की रक्षा करे।

- श्रीमती शोभा मिश्र, शांति विहा...

बदल गए साईंबाबा

एक फकीर के रूप में जो साईंबाबा ईश्वरीय शक्ति के अवतार के रूप में शिर्डी आए थे, अब उन्हीं बाबा को सोने के सिंहासन पर बिठाकर उन्हें सोने से लाद दिया गया है। पहले बाबा आम जनता के हुआ करते थे, अब तो ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे साधारण जन उनके दर्शन से ही ...ित होता जा रहा है। कितना अजीब लगता है ...रा जीवन एक साधारण फकीर के रूप में बीता, लोगों ने उसका स्वरूप ही बदल डाला। बाबा को इस तरह सोने से तोलना उचित नहीं लगता। भक्तों से अनुरोध है कि वे सोने के बजाय श्रद्धा सुमन अर्पित करें। वहां के पुजारि... को भी चाहिए कि वे सोने के हार, आभूषण ले... छोड़ें और सिर्फ फूलों के हार ही स्वीकार ... बाबा को जन साधारण से दूर न करें और 'स... मालिक एक' की भावना को ही प्रवाहित ...

-श्रीमती शोभ...
शांति वि...

Scanned with OKEN Scanner